• राष्ट्रपतिजी वायुसेना के विशेष विमान से जे.के.हवाई पट्टी पर प्रातः ९.४० बजे उतरीं। वहां राज्यपाल डा. शिवराज पाटिल, केन्द्रीय मंत्री डा. सी. पी. जोशी, राजस्थान के उद्योगमंत्री श्री राजेन्द्र पारीक, अतिरिक्त पुलिस महानिदे ाक नवदीपसिंह, संभागीय आयुक्त अर्पणा अरोड़ा, सांसद गोपालसिंह शेखावत, जिला कलक्टर डा. यशवंत बी.प्रीतम, पुलिस अधीक्षक डा.नितिनदीप ब्लग्गन, नगरपालिका अध्यक्ष आशा पालीवाल आदि ने उनकी अगवानी की।

• राष्ट्रपति के आगमन पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए। वर्दी में तथा सादी वेशभूषा में स्थान-स्थान पर सुरक्षाकर्मी तैनात थे। सघन सुरक्षा के तहत प्रदेश के कई जिलों के जवान और सुरक्षाधिकारी यहां लगाए गए थे। कार्यक्रम स्थल धोइन्दा की ओर जाने वाले मार्ग पर टीवीएस चौराहा, बिट्ठल विलास बाग के निकट तथा स्टेशन रोड पर आवागमन सुबह से ही रोक दिया गया। बिट्ठल विलास बाग के आसपास पार्किंग का बन्दोबस्त था। लोगों ने गंतव्य तक जाने के लिए वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग किया।

• राष्ट्रपतिजी के काफिले में चालीस वाहन शामिल थे। वे ९.५५ बजे पचास फीट रोड स्थित समारोह स्थल पर पहुंचीं, १०.३३ पर अपना भाषण शुरू किया, जो पन्द्रह मिनट चला। लिखित भाषण से हटकर भी लगभग उतने ही समय तक राष्ट्रपतिजी ने अतिरिक्त भाषण किया। अपने भाषण में उन्होंने कई बार पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ से अपने मिलन-प्रसंगों की चर्चा की और आचार्यश्री महाश्रमण के नेतृत्व में चल रहे नैतिक अभियान की मुक्तकंठ से सराहना की। लगभग सात बार श्रोताओं ने 'ओम अर्हम्' की ध्वनि के साथ अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

• परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का प्रवचन राष्ट्रपतिजी के आगमन से पूर्व और उनके सम्मुख दो चरणों में हुआ। आचार्यवर के उद्बोधन में सरलता, दृढ़ता, संकल्पनिष्ठा, विनम्रता का सहज दर्शन हो रहा था।

• आचार्यवर ज्यों ही मंच पर पधारे, पूरी परिषद ने खड़े होकर उच्चस्वर में 'वंदे गुरुवरम्' के साथ वर्धापन किया। आचार्यवर ने हाथ उठाकर सबको आशीर्वाद प्रदान किया।

• कार्यक्रम ठीक ८.३० बजे प्रारंभ हो गया। राष्ट्रपतिजी निश्चित समय से दस मिनट बिलंब से पहुंचीं और निर्धारित समय से पैंतीस मिनट बाद रवाना हुईं।

• समारोह के बाद राष्ट्रपतिजी व पूज्य आचार्यवर के बीच ग्रीन रूम में लगभग आठ मिनट तक विशेष वार्ता हुई।

• कार्यक्रम में संभागीय आयुक्त, पुलिस अधीक्षक, कलक्टर, सांसद गोपालसिंह शेखावत, कुंभलगढ़ विधायक गणेशसिंह परमार, राजसमंद विधायक एवं भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती किरण माहेश्वरी, उदयपुर के आई.जी.मीणा सहित अनेक पुलिस अधिकारी व एस.डी.एम. आदि उपस्थित थे।

• तेरापंथी महासभा की ओर से अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया ने चंदन काष्ठ से निर्मित कलात्मक वीणा भेंट की। उसकी कोरणी रमणीय थी। इसके पांच खंडों में आचार्यश्री महाश्रमण के जन्म-प्रसंग, दीक्षा तथा युवाचार्य और आचार्य बनने से लेकर मेवाड़ यात्रा और इससे जुड़े अनेक प्रसंगों के चित्र उत्कीर्ण थे। राष्ट्रपतिजी को सिंगापुर में सोने से निर्मित एक विशेष स्मृतिचिह्न भेंट किया गया। उन्होंने वीणा को बहुत गौर से देखा और उसकी सराहना की।

• अमृत महोत्सव की समग्र व्यवस्था के लिए कई पंडालों का निर्माण किया गया। मुख्य कार्यक्रम स्थल का डोम ८०×५००=४० हजार वर्गफीट व उसके दोनों ओर लगे शामियानों का पंडाल भी ६० हजार वर्गफीट--इस तरह कुल लगभग एक लाख वर्ग फीट में फैला हुआ था। मुख्यतः श्री भंवरलालजी बागरेचा के खेत में निर्मित इस पंडाल में समागत लोगों की समुचित व्यवस्था हेतु ३०० पंखे, ५० कूलर तथा इस ऐतिहासिक दृश्य को दूर से भी सुगमता से देखने हेतु एल.ई.डी. तथा एल.सी.डी. की व्यवस्था थी।

• पंडाल में मुख्य मंच के अतिरिक्त चार मंचों का निर्माण हुआ, जिन पर साधु-साध्वियों और

विशिष्ट अतिथियों के पृथक-पृथक बैठने की व्यवस्था थी। मंच के पीछे लगा बैकड्रॉप अत्यन्त आकर्षक था। मंच के दायीं ओर बने दो स्टेजों में एक साध्वियों और समणियों के लिए आरक्षित था, जबकि दूसरे पर राष्ट्रपतिजीके परिवार से उनके सुपुत्र, पुत्रवधू के साथ राष्ट्रपति भवन से आया स्टॉफ व अन्य अधिकारी मौजूद थे। बायीं ओर बने स्टेजों में एक पर संत विराजमान थे और दूसरे पर अतिविशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। कई खंडों व गलियारों में बेरिकेट्स लगाकर श्रद्धालुओं के बैठने की व्यवस्था की गई।

• १० व ११ मई के कार्यक्रम समायोजन हेतु प्रज्ञा विहार के समीप ही लगभग तेईस हजार वर्गफीट पंडाल निर्मित हुआ, जिसमें ज्ञानशाला व महिला मंडल के कार्यक्रम आयोजित हुए।

• भोजनालय के सूत्रों के अनुसार तीन पंडाल भोजन व्यवस्था हेतु बने थे। ४९ हजार २९ हजार तथा ९ हजार वर्गफीट के पंडालों के अलावा ज्ञानशाला के बच्चों के लिए तीन हजार वर्गफीट का स्पेशल पंडाल बनाया गया। सुचारु और त्वरित व्यवस्था हेतु चालीस काउंटर लगाए गए। स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ आसपास के क्षेत्रों के कार्यकर्ता भी व्यवस्थाओं से जुड़े हुए थे। भोजन प्रबंधन से जुड़े कार्यकर्ताओं ने बताया कि लगभग १७ हजार लोगों ने भोजन व्यवस्था का उपयोग किया। खाने में मात्र सात द्रव्य थे, जो सभी क्षेत्रों के लिए अनुकरणीय उपक्रम माना जा सकता है। भोजन व्यवस्था की विशेषता यह रही कि किसी भी आगंतुक को भोजन के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

• जल व्यवस्था के सूत्रों के अनुसार बीस-बीस लीटर वाले ३५०० ठंडे पानी के केंपर काम में आए। लगभग बीस टैंकर जल की सप्लाई की गई। गर्मी को देखते हुए स्थान-स्थान पर स्वच्छ और शीतल जल की व्यवस्था थी।

• आवास व्यवस्था से जुड़े कार्यकर्ताओं ने बताया--अमृत महोत्सव पर आने वाले यात्रियों के लिए धर्मशाला, भवन, होटल आदि २६ स्थान आरक्षित थे। लगभग ५५०० लोगों को आवास व्यवस्था उपलब्ध करवाई गई। सैकड़ों लोग व्यक्तिगत रूप से नाथद्वारा आदि में रुके।

• परिवहन सूत्रों के अनुसार दो स्पेशल ट्रेनों, सैकड़ों बसों तथा सैकड़ों छोटे और निजी वाहनों से लोग महोत्सव में भाग लेने के लिए कांकरोली पहुंचे। बड़ी संख्या में लोग मावली और फालना जंक्शन से रेल यात्रा करके भी पहुंचे। कई जगह पार्किंग जोन बनाए गए। जहां तक दृष्टि जाती वाहन ही वाहन दिखाई दे रहे थे।

• समारोह में ६१ साधु, ९२ साध्वियों, ६७ समण-समणियों सहित लगभग २० हजार लोगों की उपस्थिति आंकी गई।

• कार्यक्रम कितना कसा हुआ, आकर्षक व ग्रहणीय था उसका अंदाजा राष्ट्रपति भवन से कलक्टर के पास पहुंचे इस संदेश से लगाया जा सकता है--'कार्यक्रम बहुत सुव्यवस्थित अच्छा और प्रभावी रहा।

• महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मार्गदर्शन में अमृत महोत्सव आयोजना का समग्र उत्तरदायित्व अमृत महोत्सव के प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने बखूबी संभाला। कार्यक्रम के हर पहलू में उच्च प्रबंधन, कुशल संयोजना, समय नियोजन और कार्यकर्ताओं का टीमवर्क स्पष्ट झलक रहा था।

• समारोह के समुचित प्रबंधन में राजसमन्द के कलक्टर डा. यशवंत बी.प्रीतम, पुलिस अधीक्षक डा.नितिनदीप ब्लग्गन का सकारात्मक व सक्रिय सहयोग रहा।

• आयोजन को सफल बनाने में महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया, श्री विजयसिंह चोरड़िया, अमृत महोत्सव समिति के संयोजक श्री ख्यालीलालजी तातेड़, श्री हंसमुखभाई मेहता, श्री मनोहर गोखरू, श्री सलिल लोढ़ा, एवं श्री गौरव कोठारी का निष्ठापूर्ण योग रहा।

• राष्ट्रपतिजी के आगमन और कार्यक्रम समायोजन में मुम्बई के श्री अशोक तलेसरा एवं बेंगलोर के श्री अभय दूगड़ का कार्यकारी योगदान रहा। श्री अरविन्द गोठी एवं श्री जब्बर चिंडालिया का भी इस संदर्भ में सहयोग प्राप्त हुआ।

• समारोह की व्यवस्था के सम्यक निष्पादन हेतु तेरापंथी सभा कांकरोली के अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश

चोरड़िया, पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी,व्यवस्था समिति के संयोजक धर्मेश डांगी, सहसंयोजक गणेश कच्छारा, प्रशासनिक कार्यों में संलग्न सुरेश कच्छारा सहित पूरी टीम तथा तेयुप, महिला मंडल, कन्यामंडल, किशोर मंडल के कार्यकर्ताओं ने दिन-रात सक्रिय रहकर अपने दायित्व का निर्वहन किया।

- कांकरोली में पूज्य आचार्यवर व संतों का प्रवास विशाल 'प्रज्ञा विहार' में हुआ।

अणुविभा और तुलसी साधना शिखर पर

१४ मई। आचार्यवर ने आज प्रातः अणुव्रत विश्वभारती के लिए प्रस्थान किया। इस क्रम में पूज्यवर ने कुछ घुमावदार रास्ता लेकर प्रस्तावित अणुव्रत भवन के शिलान्यास स्थल की ओर पधारे। किन्तु मार्ग में बिछी सचित्त मिट्टी के कारण शिलान्यास स्थल से दूर ही कार्यकर्ताओं को मंगलपाठ सुनाकर पुनः अणुविभा की ओर प्रस्थित हो गए। मध्यवर्ती नगरपालिका मंडल के कार्यालय में पालिकाध्यक्ष श्रीमती आशा पालीवाल एवं अन्य पार्षदों ने पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया। पार्षदों ने नगरपालिका की ओर से अभिनंदन पत्र समर्पित किया। पूज्यवर ने उपस्थित लोगों को आध्यात्मिक पथदर्शन प्रदान किया।

पालिका से प्रस्थान कर आचार्यवर राजसमन्द के जिला कारागृह में पधारे। जेल अधीक्षक श्रीधर शर्मा ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए सादर आभार ज्ञापित किया। आचार्यवर ने यहां उपस्थित कैदियों को सद्गुणों को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर के आह्वान पर बड़ी संख्या में कैदियों ने नशा छोड़ने का संकल्प व्यक्त किया।

दो संक्षिप्त कार्यक्रमों के पश्चात पूज्यप्रवर अणुव्रत शिक्षक संसद के केन्द्रीय कार्यालय में पधारे। अध्यक्ष श्री भीखमचन्दजी नखत एवं डा. हीरालालजी श्रीमाली ने संस्थान की गतिविधियों की अवगति दी। अणुविभा के मार्ग में अणुव्रत, जीवनविज्ञान, ज्ञानशाला, जीवनशैली आदि आदि से संबद्ध झांकियों में विभिन्न शिक्षा संस्थानों से जुड़े बच्चों के द्वारा अणुविभा की बालोदय प्रवृत्ति को साकार प्रस्तुति दी गई। झांकियों का अवलोकन करते हुए नवनिर्मित सड़क से आचार्यवर अणुविभा विश्व मैत्री अतिथिगृह में पधारे। आज का प्रवास यहीं रहा। राजसमन्द झील से सटी पहाड़ी पर स्थित यह स्थान रमणीय है।

तुलसी साधना शिखर में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में बालिका मनस्वी ब्यास ने सुमधुर गीत का संगान किया। अणुविभा के अध्यक्ष श्री तेजकरण सुराणा, तुलसी साधना शिखर के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी डागलिया, कार्याध्यक्ष श्री भंवरलालजी बागरेचा, श्री गणेश डागलिया के स्वागत भाषण के पश्चात अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी, मुनि पानमलजी एवं श्री बिहारीलालजी काबड़िया ने अपने सारगर्भित विचार रखे। अणुविभा के संस्थापक श्री मोहनभाई जैन की कविता को उनकी सुपुत्री श्रीमती वीणा ने प्रस्तुति दी। श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट ने भी अपनी भावपूर्ण कविता प्रस्तुत की।

समारोह के मुख्य अतिथि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के वाइस चांसलर श्री वी. एन. पिल्लई ने कहा--'गत पांच वर्षों से हमारे विश्वविद्यालय में अणुव्रत मेमोरियल लेक्चर का आयोजन किया जा रहा है।' उन्होंने विश्वविद्यालय में शीघ्र ही 'आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा पीठ' स्थापित करने की घोषणा की। कार्यक्रम के अध्यक्ष राजस्थान पुलिस के एडीजी श्री टी.एल.मीणा ने पूज्यवर से आशीर्वाद प्राप्त किया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अणुव्रत आन्दोलन और अहिंसा यात्रा को मानवता के लिए त्राण बताया।

आचार्यवर ने आगे कहा--'आज हम अणुविभा और तुलसी साधना शिखर आए हैं। तुलसी और अणुव्रत-- दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं। अणुविभा की बालोदय प्रवृत्ति बच्चों के संस्कार-निर्माण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यहां आने वाले बच्चों को सूचनात्मक और जीवनोपयोगी जानकारी मिल सकती है। लगभग तीन वर्ष पूर्व मैंने स्वयं घंटों समय लगाकर इसका अवलोकन किया था। संचय जैन वर्षों से यहां कार्य में संलग्न है। मैंने देखा--वह शालीन और समझदार युवक है। इसके मन में कार्य के प्रति तड़प है, निष्ठा है। तुलसी साधना शिखर रमणीय और साधना के लिए उपयुक्त स्थान है। यहां रह

कर साधक साधना करें, अध्यात्म का प्रयोग करें अथवा ध्यान शिविर लगते रहें तो इस स्थान की उपयोगिता और बढ़ सकती है। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के महामंत्री संचय जैन ने किया।

मध्याह्न में अणुविभा द्वारा 'शान्ति व अहिंसा की संस्कृति का विकास' विषयक शैक्षिक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें राजसमन्द जिले के लगभग दो सौ शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं विद्यालय संचालकों की सहभागिता रही। बालोदय के कार्याध्यक्ष श्री सुरेश कावड़िया ने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पचास विद्यालयों में 'स्कूल विद ए डिफरेंस' योजना प्रारंभ करने की उद्घोषणा की। अणुव्रत लेखक मंच के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', राजसमन्द के जिला शिक्षाधिकारी डा.राकेश तैलंग एवं मुनि सुखलालजी ने संभागियों को संबोधित किया। सेमिनार में परमपूज्य आचार्यवर का पावन पाथेय भी प्राप्त हुआ। रात्रि में अणुव्रत बालोदय डाक्युमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई।

धोईन्दा में उल्लास

१५ मई। परमाराध्य आचार्यवर प्रातः तुलसी साधना शिखर एवं अणुव्रत विश्वभारती का अवलोकन करते हुए लगभग चार किमी. का विहार कर धोईन्दा पधारे। पूज्यवर के पावन पदार्पण से यहां की जनता का उल्लास चरम पर था। भव्य जुलूस के साथ आर्यवर कर्मणा जैन श्री अम्बालाल कुमावत के आवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। कुमावत परिवार आचार्यवर के इस अनुग्रह से अभिभूत था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री और मुख्यनियोजिकाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए। मुनि आनंदकुमारजी ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में इन्द्रिय संयम की प्रेरणा प्रदान की तथा किसान सम्मेलन में उपस्थित कृषकों को नशामुक्ति हेतु संबोध प्रदान किया। इस अवसर पर स्थानीय २१ महिलाओं ने पूज्यवर से बारहव्रत स्वीकार किए। श्री मोतीलाल सोनी ने सपत्नीक शीलव्रत का संकल्प स्वीकार किया।

आचार्यश्री महाश्रमण का ३८वां दीक्षा दिवस

महातपस्वी आचार्यवर का ३८वां दीक्षा दिवस। आचार्यवर प्रातः धोईन्दा से भाणा गांव की ओर प्रस्थित हुए। लगभग दो किमी. का अतिरिक्त मार्ग लेकर आचार्यवर मेवाड़ कान्फ्रेंस के कार्यालय में पधारे और यहां अल्पकालिक प्रवास किया। संक्षिप्त कार्यक्रम में मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डा.बसंतीलाल बाबेल आदि अनेक लोगों ने स्वागत करते हुए दीक्षा दिवस पर आचार्यवर को वर्धापित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'मेवाड़ यात्रा करते हुए मेवाड़ कान्फ्रेंस के मुख्य केन्द्र में आए हैं। मेवाड़ के लोगों में दायित्व और श्रद्धा का भाव है। बाबेलजी अच्छे कार्यकर्ता हैं। अध्यक्ष के रूप में अपनी कार्यक्षमता का उपयोग कर रहे हैं। मेवाड़ कान्फ्रेंस के द्वारा समाज कल्याण का कार्य होता रहे।'

कान्फ्रेंस के कार्यालय से प्रस्थान कर कुल ११ किमी. का विहार कर आचार्यवर दस बजे कड़ी धूप में भाणा पधारे। आराध्य के आगमन से यहां के लोग प्रफुल्लित थे। अनायास पूज्यवर का दीक्षा दिवस समारोह मिलना भाणावासियों के लिए सोने में सुहागा जैसा था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर से पूर्व आचार्यवर के सह दीक्षित मुनि उदितकुमारजी ने आचार्यवर के साथ जुड़े वचपन के अनेक रोचक संस्मरण सुनाए। पूज्यवर के दीक्षा प्रदाता मंत्री मुनिश्री ने दीक्षा के प्रसांगों को गरिमामय अभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज के दिन मुझे सशक्त रूप में कल्याण का पथ प्राप्त हुआ। यह दिन संयम ग्रहण और निहाल होने का दिन है। मेरा तो यह अनुभव है कि अवश्य पूर्वजन्म के कोई संस्कार रहे हैं। पूर्व में की गई साधना के संस्कार जागृत हुए, निमित्त मिले और दीक्षित होने का सौभाग्य मिल गया।' आचार्यवर ने इस अवसर पर गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के महान उपकारों और उनकी अतिशय कृपा का विशेष श्रद्धा के साथ स्मरण किया।

आचार्यवर ने आगे कहा--'गुरुदेव तुलसी का अनुग्रह बरसा और मुझे मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी के हाथों से दीक्षित होने का अवसर प्राप्त हुआ। इसका मुझे सात्विक संतोष है। मुनिश्री प्रभावशाली संत हैं। मेरी दीक्षा के लिए आपने बहुत श्रम किया। दीक्षा के बाद भी लगभग दो वर्षों तक मुझे आपकी सन्निधि में रहने का सुयोग मिला।' प्रवचन के मध्य पूज्यवर ने कृतज्ञ भाव से मंत्री मुनि को वंदना की तो विनय की जीवंत परंपरा को देखकर उपस्थित जनता अभिभूत हो गई।

आचार्यवर ने अपनी संसारपक्षीया मां नेमादेवी और संसारपक्षीय अग्रज सुजानमलजी के उपकार की भी स्मृति की।

वैराग्यपुष्टि हेतु किए गए मुनिवृन्द के श्रम का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मैं मुनि सोहनलालजी स्वामी चाड़वास का कृतज्ञ भाव से स्मरण करता हूं। उन्होंने मुझ पर बहुत श्रम किया। उनके परिश्रम और कृपा से मैंने अनेक थोकड़े कंठस्थ किए। मुनि रोशनलालजी स्वामी का मेरे प्रति स्नेहभाव था। उन्होंने भी मेरे लिए बहुत श्रम किया। मुनिश्री पानमलजी का योग भी मेरी वैराग्यपुष्टि में सहायक रहा।

आचार्यवर ने आगे कहा--'मुनिश्री उदितकुमारजी हमारे संघ के कुशल, समझदार, उपयोगी और समर्पित मुनि हैं, शासन के भक्त हैं। अनेक कार्यों में आपका सहयोग लिया जा सकता है। ऐसे सहदीक्षित मुनि को पाकर मुझे सात्विक संतोष है।'

कार्यक्रम के पश्चात पूज्यप्रवर स्थानीय तेरापंथ भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। भाणा में १४ तेरापंथी परिवार हैं। रात्रि में उन्हें पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यवर ने सबको धार्मिक संबोध प्रदान किया। मध्याह्न में बालोतरा निवासी श्री अरविन्दजी भंडारी १२५ लोगों के साथ सपरिवार पूज्य चरणों में उपस्थित हुए और दर्शन-उपासना का लाभ लिया।

कहीं धूप तो कहीं छांव : नहीं रुके महातपस्वी के पांव

१७ मई। आज आचार्यवर ने तासोल के लिए विहार किया। मार्गवर्ती ब्राम्हणबहुल मंडावर गांव के लोगों ने बड़ी संख्या में मुख्य मार्ग पर पहुंचकर पूज्यवर से प्रेरणा प्राप्त की। ग्रामीणों में आचार्यवर के दर्शनों की होड़-सी लग गई। अनेक लोगों ने नशा छोड़ने का संकल्प व्यक्त किया। विहार के समय आकाश घने बादलों से आच्छादित था, किन्तु वीतरागकल्प आचार्यवर समत्वभाव से वैसे ही गतिमान रहे, जैसे कल की कड़ी धूप में। लगभग चार किमी. का विहार कर आचार्यवर तासोल के नवनिर्मित महाश्रमण भवन में पधारे। आचार्यवर का स्वागत कर गांववासी पुलकित और प्रमुदित थे। उनकी प्रसन्न मुखाकृति उनके आन्तरिक भावों को अभिव्यक्त कर रही थी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी और मंत्री मुनिश्री ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। साध्वी प्रज्ञाश्रीजी ने अपनी जन्मभूमि पर पूज्यचरण का अभिनंदन करते हुए कुछ त्यागमय संकल्प अभिव्यक्त किए। नचिकेता मुनि मृदुकुमारजी ने अपने दीक्षा दिवस पर पूज्यवर से मंगल आशीर्वाद की प्रार्थना की। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'वैशाख शुक्ला पूर्णिमा का दिन भगवान बुद्ध के साथ जुड़ा हुआ दिन है। महात्मा बुद्ध मानों करुणा के अवतार थे। वे विरक्तिमान महापुरुष थे। उनका संकल्पबल अनूठा था।

चार वर्ष पूर्व दीक्षित हुए पांच मुनियों का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'बाल मुनि मृदुकुमारजी नौ वर्ष से भी कम अवस्था में दीक्षित हुए। इतनी अल्पायु में दीक्षित होने वाले विरल मुनियों में से ये एक हैं। गुरुदेव ने इन्हें मेरे पास रखा। यह भी संयोग की बात है कि मेरा और इनका जन्मदिन एक ही मास और तिथि का है। दीक्षा में भी एक ही दिन का अन्तर है। ये अच्छे, प्रतिभासंपन्न और मेरे प्रति विशेष सेवा की रुचि रखने वाले मुनि हैं। मेरे शरीर और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने का प्रयास करते हैं। विद्वच्छिरोमणि बनकर मेरे द्वारा पूर्व में कही गई बात को चरितार्थ करें।' मुनि अनुशासनकुमारजी इनके अग्रज हैं। वे भी अच्छे और कार्य में रुचि रखने वाले मुनि हैं। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहे। इनके माता-पिता ने अपनी दोनों संतानों को संघ को सौंप कर साहस का कार्य किया है। वे साधुवाद के

पात्र हैं।'

मुनि गौतमकुमारजी अब युवा हो गए हैं। ये हमारे गोचरी वाले मुनि हैं। मेरे गोचरी जाने के समय बड़ी जागरूकता के साथ तैयार रहते हैं। इनमें सेवा की अच्छी भावना है। सेवा धर्म भी कल्याण करने वाला होता है। इनके अनुज मुनि सुधांशुकुमारजी भी अच्छे संत हैं। शासन गौरव मुनि ताराचन्दजी के द्वारा आज के दिन ही मुनि आदित्यकुमारजी दीक्षित हुए। वे भी प्रतिभाशाली मुनि हैं। पांचों संत खूब विकास करते रहें।'

तासोल के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम तासोल आए हैं। इसका नाम गुरुदेव तुलसी ने 'तुलसी ग्राम' रखा था। यहां की जनता में अणुव्रत का प्रभाव बना रहे।'

मेवाड़ में श्वेत पहाड़

१८ मई। प्रातः लगभग आठ किमी. का विहार कर आचार्यवर बोरज पधारे। मार्ग में मार्बल की खानों के आसपास पत्थर के टुकड़ों के ऊंचे और विशाल ढेर लगे हुए थे। मानों मेवाड़ के पहाड़ी भू-भाग में श्वेत पहाड़ खड़े किए जा रहे हों। बोरज की जनता ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। वि ाल जुलूस के साथ आचार्यवर भेरूंलालजी परमार के आवास पर पधारे और यहां अल्पकालिक प्रवास किया। पूरा परमार परिवार आचार्यवर की इस कृपावृष्टि से अभिष्णात होकर श्रद्धा प्रणत था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर से पूर्व साध्वीप्रमुखाजी व मुख्यनियोजिकाजी के प्रेरणादायी वक्तव्य हुए। समणी मंजुलप्रज्ञाजी ने अपनी जन्मभूमि में आराध्य का स्वागत किया। मुनि प्रकाशकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अनुकंपा और नैतिकता को अंगीकार करने की प्रेरणा प्रदान की। श्री नरेश परमार ने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पांच ग्रामीण विद्यालयों में अपने परिवार की ओर से कम्प्यूटर सेंटर स्थापित करने की घोषणा की।

प्रवचन के पश्चात आचार्यवर देवीलालजी परमार के आवास पर पधारे। आजका प्रवास यहीं हुआ। देवीलालजी और उनके भाई के बाईस वर्षीय पौत्र दीक्षित का तीन दिन पूर्व ही एक हृदयविदारक दुर्घटना में देहावसान हो गया था। पूज्यवर ने दीक्षित के घर पधार कर परिजनों को सम्बल प्रदान किया। अन्य घर में स्थित देवीलालजी के परिवार को भी पूज्यवर से आध्यात्मिक सम्बल प्राप्त हुआ। पूरा परिवार सायंकाल गुरु चरणों में उपस्थित हुआ और पूज्यवर से पाथेय प्राप्त किया। रात्रि में आचार्यवर ने स्थानीय तेरापंथी परिवारों को उपासना करवाई।

आदर्श-निर्मल ग्राम पिपलान्त्री में

१९ मई। महातपस्वी आचार्यवर ने प्रातः बोरज के तेरापंथ भवन का स्पर्श करते हुए पिपलान्त्री की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती पुठोल गांव में सरपंच खूमसिंह आदि ग्रामवासियों ने पूज्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। यहां दो तेरापंथी परिवार हैं। पोखरना और धाकड़ परिवार अपने आराध्य को अपने बीच पाकर उल्लसित था। संक्षिप्त कार्यक्रम में आचार्यवर ने उपस्थित जनसमूह को पावन प्रेरणा प्रदान की। सरपंच खूमसिंहजी ने पूज्यवर से प्रेरित होकर बीड़ी छोड़ने का संकल्प व्यक्त किया।

पुठोल से पिपलान्त्री के मार्ग में श्री विक्रम अरोड़ा ने अपने अरोड़ा जे.के.नेचुरल मार्बल्स लि. की ओर से पूज्यवर का स्वागत किया और अपने प्रतिष्ठान के कर्मचारियों के साथ पूज्यवर से पावन पाथेय प्राप्त किया। ८.०७ किमी. का विहार कर आचार्यवर पिपलान्त्री पधारे। पूरे गांव में हर्ष और उल्लास का वातावरण था। पूर्व सरपंच श्री श्यामसुन्दर पालीवाल ने पूज्य आचार्यवर का अभिनंदन करते हुए निर्मल ग्राम आदर्श ग्राम परियोजना के अन्तर्गत चलने वाली गतिविधियों की अवगति दी। पूज्यवर जुलूस के साथ ग्राम पंचायत भवन में पधारे। यहां सरपंच श्री देवीलालजी वैष्णव आदि ने आचार्यवर का स्वागत किया। पिपलान्त्री में आचार्यवर का प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखाजी एवं मुख्यनियोजिकाजी के अभिभाषण हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'पिपलान्त्री में बाह्य परिवेश को स्वच्छ बनाने तथा पर्यावरणशुद्धि की दृष्टि से प्रयास किया जा रहा है। इसके साथ आन्तरिक परिवेश और पर्यावरण को भी शुद्ध और पवित्र बनाने का प्रयास हो। इसके लिए संयम और अहिंसा को आत्मसात करें।'

मध्याह्न में बारां जिला कलक्टर श्री नवीन जैन पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए और आचार्यवर से मार्गदर्शन प्राप्त किया। उल्लेखनीय है--श्री नवीनजी तेरापंथी परिवार से संबद्ध हैं। रात्रिकालीन कार्यक्रम के पश्चात स्थानीय तेरापंथी परिवारों ने आचार्यवर की उपासना का लाभ उठाया।

मेवाड़ का असली आनंद

२० मई। आज प्रातः आचार्यवर ने कानादेव का गुड़ा की ओर विहार किया। कुछ दूर चलने पर आचार्यवर ने कुछ कम दूरी वाला कच्चा पथ स्वीकार किया। पं. दुर्गाशंकरजी ने पूरे मार्ग में आगे-आगे चलकर पथ की सम्यक अवगति दी। यह कच्चा मार्ग मेवाड़ के वास्तविक स्वरूप को प्रतिबिंबित कर रहा था। उबड़-खाबड़ पथरीला दुर्गम पहाड़ी रास्ता दोनों ओर से कंटीली झाड़ियों से आवृत्त था। सघन वृक्षों की डालियों पर बैठे पंछियों का मधुर कलरव प्रकृति के प्रांगण में होने के साथ-साथ जंगल का स्पष्ट अहसास करा रहा था। एनीकट की दीवार और मात्र पत्थरों से बनी दीवार भी पूज्यचरण के लिए बाधक नहीं बनी। पानी से भरे हुए खुले कुएं राहगीरों के लिए सावधानी के संकेत थे। बुढाण रोड पर पहुंचते ही इस मार्ग का एक भाग संपन्न हो गया और इस सड़क को पार करते ही दूसरा भाग प्रारंभ हो गया। संकरी पगडंडियों में आचार्यवर की धवलवाहिनी और श्रद्धालुओं का काफिला कतारबद्ध होकर नयनाभिराम दृश्य उपस्थित कर रहा था।

कच्चे मार्ग की संपन्नता के बाद पक्की सड़क और पुनः कच्चे मार्ग से होते हुए आचार्यवर मार्गवर्ती दोवड़ गांव पधारे। यहां के स्थानकवासी परिवारों व अन्य लोगों ने पूज्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। आचार्यवर ने उन्हें धार्मिक प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर यहां के स्थानक में भी पधारे।

दोवड़ से प्रस्थान कर लगभग १४ किमी. का विहार कर आचार्यवर कानादेव का गुड़ा पधारे। स्थानीय लोगों के दिलों में श्रद्धा का दरिया-सा लहरा रहा था। कुलांचें भरती उनकी प्रसन्नता उनके चेहरों पर अनायास मुखरित हो रही थीं। यहां आचार्यवर का प्रवास सूरजमलजी गेहरीलालजी दूगड़ के आवास पर रहा। दूगड़ परिवार के लिए आज का दिन मानो सभी त्यौहारों का संगम था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी एवं मुख्य नियोजिकाजी ने जनता को संबोधित किया।

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में गुरु-शिष्य संबंधों की विवेचना की और गुरुदेव तुलसी की मासिक पुण्यतिथि के संदर्भ में उनका पुण्य स्मरण करते हुए उनकी स्मृति में गीत का संगान किया। सायंकाल दूगड़ परिवार ने पूज्यवर की निकट उपासना का लाभ लिया। रात्रि में तेरापंथी परिवारों को आचार्यवर का निकट सान्निध्य प्राप्त हुआ। पूज्यवर ने सबको धार्मिक प्रेरणा प्रदान की।

१० किमी. का अतिरिक्त विहार

२१ मई। अहिंसा यात्रा का आज का पड़ाव स्थल था फरारा। फरारा गांव कानादेव का गुड़ा से मात्र १.०२ किमी. की दूरी पर स्थित है। किन्तु आचार्यवर ने फरारा स्थित प्रवास स्थल पधारने से पूर्व दस किमी. का अतिरिक्त विहार किया। इसका कारण बनी फरारा से पांच किमी. की दूरी पर स्थित पीपरड़ा के श्रद्धालुओं की बलवती भावना। करुणार्द्र महातपस्वी आचार्यवर विहार की लम्बाई की अनदेखी तो कर सकते हैं, किन्तु भक्त-हृदयों की भावनाओं की अनदेखी आपसे कैसे हो सकती है? मात्र एक तेरापंथी परिवार को तृप्त करने हेतु आप पीपरड़ा पधारे। भंवरलालजी, नानालालजी, रो ानलालजी--इन तीन भाइयों का यह बाफना परिवार पूज्यवर के प्रति अतिशय कृतज्ञभाव से श्रद्धानत था। अपने अल्पकालिक प्रवास में आचार्यवर तीनों घरों में पधारे। संक्षिप्त कार्यक्रम में महेश बाफना और बाफना परिवार की महिलाओं ने आराध्य का भावपूर्ण स्वागत किया। आचार्यवर ने उपस्थित जनसमूह को आध्यात्मिक प्रेरणा

प्रदान की। बाफना परिवार को आचार्यवर की सेवा का अवसर भी प्राप्त हुआ।

पीपरड़ा से प्रस्थान कर आचार्यवर फरारा पधारे। संपूर्ण गांव में उल्लास और उमंग का वातावरण था। फरारा में आचार्यवर का प्रवास हीरालालजी लोढ़ा के आवास पर हुआ। भंवरलालजी के छह पुत्रों का यह लोढ़ा परिवार आराध्य को अपने आंगन में पाकर फूला नहीं समा रहा था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्यवर से पूर्व महाश्रमणीजी एवं मुख्यनियोजिकाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में शिष्य को गुरु की कृपा प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहने तथा परम की ओर प्रस्थित होने की प्रेरणा प्रदान की। सायंकाल फरारा के सरपंच श्री बहादुरसिंहजी ने आचार्यवर के दर्शन कर धार्मिक संबोध प्राप्त किया। रात्रि में स्थानीय तेरापंथी परिवारों को पूज्यप्रवर ने सेवा करवाई।

गुड़ के प्रतिरूप गुरु का गुड़ला समागमन

२२ मई। पूज्य आचार्यवर प्रातः फरारा के प्रसिद्ध कुंतेश्वर महादेव मंदिर में पधारे। मंदिर के अवलोकन के बाद आचार्यवर गुड़ला की ओर प्रस्थित हो गए। लगभग दो किमी. कम पड़ने वाले कच्चे मार्ग से यात्रा के दौरान मध्यवर्ती 'चिंतामणि की माडड़ी' गांव में आचार्यवर गोपालजी श्रीमाली के घर पधारे और ग्रामीण जनता को प्रेरणा प्रदान की। यहां से प्रस्थान कर आचार्यवर नन्दसमन्द को राजसमन्द झील से जोड़ने वाली नहर से सटे हुए मार्ग से पांच किमी. का विहार कर गुड़ला पधारे। स्थानीय ठाकुर भैरूंसिंहजी चौहाण के भावपूर्ण अनुरोध पर आचार्यवर रावला तक पधारे और चौहान परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यवर के पदार्पण से गुड़ला की जनता का उत्साह हिलोरें ले रहा था। जोशीले नारों में प्रतिबिंबित होता वह उत्साह गांव में अलौकिक वातावरण निर्मित कर रहा था। आचार्यवर का प्रवास यहां तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज हम गुड़ला आए हैं। गुड़ला नाम में गुड़ शब्द है। एक संस्कृत कवि ने गुड़ के गुणों की चर्चा करते हुए कहा है--अदरक, हरड़ और सोंठ के साथ गुड़ क्रमशः कफ, पित्त और वायु का शामक होता है। गुरु गुड़ का दूसरा रूप होता है। वह शिष्य के आक्रोश, चंचलता और मोह--इन तीनों को नष्ट करने का प्रयास करता है। ये तीनों क्रमशः पित्त, वायु और कफ के प्रतीक हैं। शिष्य गुरु से प्रेरणा प्राप्त कर जीवन में गुणात्मक विकास का प्रयास करे।'

गुड़ला में २२ तेरापंथी परिवार हैं। रात्रि में उन्हें आचार्यवर की उपासना का अवसर मिला। पूज्यप्रवर ने उन्हें धार्मिक संबोध प्रदान किया।

श्रीनाथद्वारा में आचार्यवर का प्रथम पादार्पण

२३ मई। प्रातः गुड़ला से नाथद्वारा की ओर विहार करते हुए आचार्यवर मार्गवर्ती धांयला गांव में पधारे। स्थानीय जैन परिवार आचार्यवर के पदार्पण से उत्साहित थे। संक्षिप्त कार्यक्रम में आचार्यवर ने उन्हें आध्यात्मिक प्रेरणा दी। यहां से प्रस्थान कर आचार्यवर बनास नदी के ऊपर बने पुल से होते हुए गार्डन व्यू होटल पधारे। मुम्बई प्रवासी श्री किशनलालजी डागलिया आदि परिजनों ने अपनी होटल में आराध्य का आस्थासिक्त स्वागत किया।यहां अल्पकालिक प्रवास के बाद आचार्यवर विशाल जुलूस के साथ राष्ट्रीय विद्यापीठ मॉडर्न स्कूल पधारे। पूज्यवर के प्रथम बार पादार्पण पर नाथद्वारा के लोगों ने स्वागत में पलक-पांवड़े बिछा दिए।

विद्यालय परिसर में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में नगर मंडल नाथद्वारा की अध्यक्ष श्रीमती गीता शर्मा ने श्रीनाथजी की धरा पर आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत करते हुए नगरमंडल की ओर से प्रस्तुत अभिनंदन पत्र का वाचन किया। पार्षदों ने अभिनंदन पत्र आचार्यवर को समर्पित किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'हजारों लोग प्रतिदिन श्रीनाथजी के इस तीर्थ में आते हैं। दिन भर में दिखाई जाने वाली आठ झांकियों के दर्शन करते हैं। आज इस तीर्थ में जंगमतीर्थ के रूप में आचार्यवर का आगमन हुआ है। इस तीर्थ के प्रवास का लाभ उठाकर अपने जीवन को सफल बनाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हम मेवाड़ में आचार्य भिक्षु के क्षेत्रों में परिभ्रमण कर रहे हैं। नाथद्वारा तो उनका प्रमुख क्षेत्र रहा है। मैं यहां पहली बार आया हूं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने वि.सं. २०३९ में यहां मर्यादा महोत्सव किया था। उस समय मैं जैन विश्वभारती लाडनूं में था। लगभग तीन वर्ष पूर्व परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ यहां पधारे, तब मैं कानोड़ आदि क्षेत्रों की यात्रा पर था। मैं दोनों गुरुओं के साथ नहीं आ सका। अब स्वतंत्र रूप में यहां आया हूं।' नाथद्वारा के साथ जुड़े तेरापंथ के ऐतिहासिक प्रसंगों की स्मृति करते हुए आचार्यवर ने कहा--'नाथद्वारा महान क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु का क्षेत्र है। उन्होंने यहां अनेक चतुर्मास किए। एक चतुर्मास के दौरान बीच में उन्हें विहार करना पड़ा। यहीं आचार्य भिक्षु के दर्शन करते ही जेल में बन्द श्रावक शोभजी की बेड़ियां टूटीं। स्वनामधन्य, प्रातःस्मरणीय, शासन और आचार्य भिक्षु के भक्त, पदलिप्सा से मुक्त खेतसीजी स्वामी जैसे महामुनि की यह भूमि है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'हम अहिंसा यात्रा के साथ नाथद्वारा आए हैं। यहां की जनता के लिए हमारा सन्देश है कि यहां के बाजार में नैतिकता रहे। जैसे श्रीनाथजी का शृंगार किया जाता है, वैसे ही यहां का बाजार नैतिकता के शृंगार से सुसज्जित हो और व्यवहार में अहिंसा हो। धर्म जीवन में आए और जनता में आपसी सौहार्द और प्रेम बना रहे।'

प्रवचन के पश्चात आचार्यवर रमेशजी मूथा के आवास पर पधारे। आजका प्रवास यहीं हुआ। आचार्यवर की कृपावृष्टि से अभिष्णात मूथा परिवार के पास अपने सौभाग्य की सराहना के लिए शब्द नहीं था।

मध्यान्ह में आचार्यवर लगभग ३.४५ बजे सुप्रसिद्ध श्रीनाथजी मंदिर में पधारे। लाखों लोगों की आस्था के केन्द्र इस मंदिर में आचार्यवर ने उत्थापन झांकी का अवलोकन किया। मंदिर वार्ड के सी.ई.ओ. अजय शुक्ला और श्री सुधाकर शास्त्री ने मंदिर की ऐतिहासिकता से आचार्यवर को अवगत कराया। आचार्यवर ने मंदिर परिसर के विभिन्न खंडों का अवलोकन किया। मंदिर से प्रस्थान कर आचार्यवर आचार्य भिक्षु की चातुर्मास स्थली फौजमलजी तलेसरा के आवास पर पधारे। तत्पश्चात स्थानीय तेरापंथ भवन में पधार कर उपस्थित जनसमूह को आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर ने भवन की दोनों मंजिलों का अवलोकन भी किया। आचार्यवर नगर मंडल की अध्यक्ष श्रीमती गीता शर्मा के भावपूर्ण अनुरोध पर उनके आवास में भी पधारे।

सायंकाल श्री रवीन्द्र जोशी (अतिरिक्त जिला एवं सेशन न्यायाधीश राजसमन्द), श्री महेन्द्र मेहता (सिविल न्यायाधीश वरिष्ठ खंड, राजसमन्द) एवं श्री बुलाकीदासजी ब्यास (सिविल न्यायाधीश, वरिष्ठ खंड, नाथद्वारा) पूज्य चरणों में उपस्थित हुए और मार्गदर्शन प्राप्त किया।

आज पचपदरा निवासी श्री मांगीलालजी चोपड़ा लगभग ढाई सौ लोगों के साथ सपरिवार गुरु सन्निधि में पहुंचे और दर्शन एवं उपासना का लाभ लिया। आचार्यवर ने उन्हें धार्मिक संबोध प्रदान किया।

२४ मई। प्रातः नाथद्वारा से १२.५ किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर घोड़ाघाटी पधारे। मार्गवर्ती राबचा गांव में सरपंच श्री अर्जुनसिंहजी आदि ने पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर ने वृक्ष के नीचे विराजमान होकर ग्रामीणों को संबोधित किया। घोड़ाघाटी में आचार्यवर का प्रवास नाथूजी मोहनजी गाडरी के मकान में हुआ। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का प्रवास श्री डूंगरसिंहजी हिम्मतसिंहजी झाला के आवास पर हुआ। दोनों परिवार भावविभोर थे। दोनों ने अपना पूरा घर प्रवास हेतु समर्पित कर दिया। तेरापंथ की गुरुधारणा के नियमों को समझकर परम पूज्यवर से दोनों परिवारों ने तेरापंथ की श्रद्धा स्वीकार की। गांव की एक अन्य महिला लीलावती सेठ ने भी सपरिवार गुरुधारणा स्वीकार की।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने प्रातःकालीन प्रवचन में लज्जा, दया, संयम आदि गुणों को आत्मसात करने की अभिप्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर ने लाडनूं में दिवंगत साध्वी सुमतिकुमारीजी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी स्मृति में चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया।

साध्वी सुमतिकुमारीजी (लाडनूं) का स्वर्गवास

साध्वी सुमतिकुमारीजी का गत १६ मई २०११, वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को लाडनूं सेवाकेन्द्र में स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'साध्वी सुमतिकुमारीजी लाडनूं के बोरड़ परिवार से संबद्ध थीं। उन्नीस वर्ष की अविवाहित अवस्था में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी से सरदार ाहर में दीक्षा स्वीकार की। लगभग बयालीस वर्षों तक साध्वी रतनकुमारीजी(लाडनूं) की सहगामिनी के रूप में रहने के बाद साध्वी राकेशकुमारीजी(बायतू) के साथ रहीं। पिछले कुछ समय से वे लाडनूं सेवाकेन्द्र में थीं। अपने जीवन में उन्होंने अनेक वर्षों तक श्रावण-भाद्रपद महीने में एकान्तर तप किए। सिलाई-रंगाई आदि कार्यों में दक्षता अर्जित की। साध्वी रतनकुमारीजी के अस्वास्थ्य की स्थिति में उनकी निष्ठा से सेवा की। उन्होंने धर्मसंघ की सेवा की और धर्मसंघ ने उनकी सेवा की। अंतिम समय में उन्हें अपनी सहदीक्षिता और लाडनूं सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कमलश्रीजी की सन्निधि में रहने का अवसर मिल गया। उनकी आत्मा शीघ्र मोक्ष का वरण करे।'

पदाभिषेक के एक वर्ष की संपन्नता के अवसर पर
परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा प्रदत्त विशिष्ट संबोधन

१. श्री सूरजमलजी बोथरा	बीकानेर	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
२. श्री भंवरलालजी भंसाली	गंगाशहर-पाली	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
३. श्री छगनलालजी गोखरू	आसीन्द	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
४. श्री लाभचन्दजी पुगलिया	श्रीडूंगरगढ़-दिल्ली	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
५. श्री भीखमचन्दजी बैद	श्रीडूंगरगढ़	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
६. श्री हणवंतरायजी मेहता	जोधपुर	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
७. श्री सरबतमलजी धाड़ीवाल	छोटीखाटू	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
८. श्री रोशनलालजी धाकड़	शिशोदा-मुम्बई	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
९. श्री विपिनभाई शाह	मुम्बई	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१०. श्री मदनलालजी बीकानेरिया	जावद	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
११. श्री पुखराजजी भंडारी	रतलाम	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१२. श्री महेशभाई नानावटी	सूरत	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१३. श्री पुखराजजी धोका	सायरा-सूरत	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१४. स्व.श्री मोहनलालजी सेठिया	पूना	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१५. स्व.श्री नवरत्नमलजी बोथरा	लूणकरणसर	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१६. स्व.श्री रोशनलालजी सुराणा	आमेट	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१७. स्व.श्री धूलचन्दजी कोठारी	सेवन्त्री	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१८. श्री इन्द्रमलजी राठौड़	बड़ी रावलिया-सूरत	तपोनिष्ठ
१९. स्व.श्रीमती धन्नीदेवी बुरड़	जसोल	तपोनिष्ठ
२०. श्रीमती बच्छूबेन कुसुमभाई जवेरी	सूरत	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२१. श्रीमती संतोकीदेवी धाकड़	शिशेदा	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२२. श्रीमती पिस्तांबाई बोहरा	मुसालिया-बेंगलोर	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२३. श्रीमती कंचनदेवी मेहता	मजेरा	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२४. श्रीमती भंवरीदेवी महनोत	उदासर	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२५. स्व.श्रीमती रायकंवरीदेवी सेठिया	मोमासर-फारबिसगंज	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

२६. स्व.श्रीमती गीतादेवी सिंघी	मुम्बई	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२७. श्री लक्ष्मीलालजी बाफना	उधना	अणुव्रतसेवी
२८. श्री सुआलालजी बोरा	चांखेड़	अणुव्रतसेवी
२९. श्री चांदमलजी भलावत	चांदरास	अणुव्रतसेवी
३०. श्रीमती इन्द्राबहन पटवा	भीनासर	अणुव्रतसेवी

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**